समाज विकासमाला

नाना फड़नवीस

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : ७१

नाना फड़नवीस

लेखक
श्रीपाद जोशी

सम्पादक
यशपाल जैन

१९५७

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

पहली बार : १९५७
मूल्य :
छः आना

मुद्रक
हिंदी प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

पाठकों से

हमारे देश में बहुत-से महापुरुष हुए हैं। उन्होंने अपने समय में बड़ा काम किया है। तभी तो उनकी बातें आज भी बड़े आदर और चाव से पढ़ी जाती हैं।

नाना फड़नवीस ऐसे ही महापुरुषों में से थे। उन्होंने अपनी बुद्धिमानी से ऐसे-ऐसे काम किये कि पढ़कर अचरज होता है। वह शरीर से कमजोर थे, पर उनकी-जैसी बुद्धि कम ही लोगों को मिलती है।

इस किताब में नाना फड़नवीस और उनके कामों की जानकारी दी गई है। पाठक देखेंगे कि इस महापुरुष के जीवन से कितनी बातें सीखी जा सकती हैं।

हमें आशा है कि पाठक इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ेंगे और लाभ उठावेंगे।

—सम्पादक

नाना फड़नवीस

: १ :

नाना फड़नवीस का असली नाम बालाजी था। उनके पिता का नाम जनार्दन था। घर के लोग उन्हें भानु कहते थे। उनके पुरखा कोंकण से पेशवाओं के साथ पूना की तरफ़ आये थे। नाना का जन्म सातारा में १२ फ़रवरी सन् १७४२ को हुआ। इनके खान्दान में पेशवाओं की फड़नवीसी[1] पुश्तों से चली आई थी। इसलिए आगे चलकर उनके पिता फड़नवीस के नाम से ही पुकारे जाने लगे।

बचपन में नाना को पेशवाओं के लड़कों के साथ ही शिक्षा मिली। उन दिनों शिक्षा का ढंग बहुत सीधा-सा था। सुंदर अक्षर लिखना, हिसाब-किताब रखना, मराठी राज्य का मामूली इतिहास जान लेना, घुड़सवारी करना, तलवार-भाला-बंदूक चलाना, राज्य की जमाबंदी की जानकारी कर लेना, यही चीजें शिक्षा में शामिल थीं। इनमें से जितनी बातें दिमाग़ से संबंध रखती थीं, उन सबमें नाना बहुत होशियार होगये थे; मगर उनकी तंदुरुस्ती अच्छी नहीं रहती थी।

[1] हिसाब-किताब का काम।

उस ज़माने में महाराष्ट्र के हर आदमी ही नहीं, बल्कि हर स्त्री को भी लड़ाई की शिक्षा दी जाती थी; क्योंकि हरेक को लड़ाई में शामिल होना पड़ सकता था। ऐसी हालत में नाना फड़नवीस का इस तरह कमजोर रहना बड़े दुर्भाग्य की बात थी। आगे चलकर इसका फल बहुत बुरा निकला। उनके पास बड़ी पैनी बुद्धि ज़रूर थी, मगर शरीर से कमज़ोर होने की वजह से उनको हर बार किसी-न-किसी सरदार या सेनापति का मुंह ताकना पड़ता था।

पिता की मृत्यु के बाद चौदह वर्ष की उम्र में ही नाना को फड़नवीसी का काम दिया गया। लेकिन उनकी सेहत खराब तथा उम्र कम होने की वजह से उनके चाचा उनकी तरफ़ से सारा कारोबार चलाते थे।

: २ :

नाना को रस्मी तौर पर बड़ी जल्दी ही फड़नवीसी का काम मिल गया था, मगर असल में उन्होंने सात साल बाद इस काम की बागडोर सम्हाली। इस समय माधवराव पेशवा राज्य करते थे। नाना फड़नवीस पर माधवराव को पूरा भरोसा था। जब वे लड़ाई पर जाते तब क़िले और राजकाज के सभी काम नाना के सुपुर्द कर जाते। पेशवा के साथ पचहत्तर हज़ार तक सिपाही रहते थे। उन सबके लिए जितना खर्च

होता था वह वसूल करके माधवराव को भेजने की ज़िम्मेदारी नाना के ऊपर रहती थी। पैसे के साथ ही



नाना फड़नवीस

गोला-बारूद आदि लड़ाई का सामान भी जमा करके

वे लड़ाइयों में भेजते थे। इससे भी ज्यादा महत्व की बात यह थी कि पेशवाओं की ग़ैरहाजिरी में वे राज का प्रबंध बड़ा अच्छा रखते और किसीको कोई झगड़ा खड़ा करने का मौक़ा ही न देते। इससे माधवराव पेशवा बेफिक्र होकर अपना सारा ध्यान लड़ाइयों में दे सकते थे।

ख़र्च की छोटी-सी-छोटी बातों पर भी नाना की नज़र रहती थी। एक बार माधवराव किसी लड़ाई पर चले गये। हमेशा की तरह उनकी पत्नी रमाबाई का मुंशी ख़र्च की सूची बनाकर मंज़ूरी के लिए नाना के पास ले गया। उन्होंने उसे देखकर उसमें से पानों की मद काट डाली। मुंशी को बड़ा अचरज हुआ कि नाना ने ऐसा कैसे किया? जब उसने शिकायत के तौर पर इसकी वजह पूछी तो नाना ने कहा, "पेशवा जबतक वापस नहीं लौटते तबतक उनकी श्रीमतीजी पान नहीं खा सकतीं। इसलिए इस ख़र्चे की कोई ज़रूरत नहीं।"

नाना की बात से रमाबाई को बड़ा गुस्सा आया और माधवराव के लौटने पर उन्होंने यह बात उनसे कही। माधवराव बड़े समझदार आदमी थे। उन्होंने नाना की ही हिमायत की।

माधवराव पेशवा सन् १७७२ में तपेदिक़ की बीमारी से परलोक सिधारे। उनके बाद उनके छोटे भाई नारायणराव पेशवा बने। वे बिल्कुल अल्हड़ और

कच्ची बुद्धि के थे। वे अक्खड़पन से चाहे जिसका अपमान कर देते थे। इससे उनके मित्र बहुत कम रह गये। उनके इस बर्ताव से नाना को बड़ा दुःख होता था।

एक बार नारायणराव पटा-बनेठी देखने के लिए रास्ते में रुक गये। खुद उन्होंने भी पटा चलाना सीखा था,



नारायणराव ने नाना की पगड़ी नीचे गिरा दी।

इसलिए पटेबाज़ी देखकर उनको भी जोश आया और लगे पटा और बनेठी चलाने। इतने में उनके दिमाग़ में शैतान घुस गया और उन्होंने बनेठी से नाना के सिर की पगड़ी नीचे गिरा दी और मजाक में बोले, "क्यों नानाजी, आपकी पगड़ी तो नीचे गिर गई!" इसपर नाना बोले, "महाराज, मेरी पगड़ी गिर गई तो क्या हुआ? मैं तो मुंशी ही हूं, लेकिन आप अपनी पगड़ी सम्हाले रहिए!"

अगर नारायणराव की जगह दूसरा कोई समझदार आदमी होता तो वह नाना की बात से सबक़ लेता, मगर नारायणराव ने नाना की बात को हँसी में टाल दिया। उसके बाद थोड़े ही दिनों में उनकी चाची आनंदीबाई ने उनका खून करवा दिया।

नारायणराव की हत्या के बाद उनके चाचा रघुनाथराव उर्फ़ राघोबा दादा गद्दी पर बैठे, मगर वे बहुत चंचल स्वभाव के आदमी थे। इससे पहले भी उन्होंने पेशवाओं के ख़िलाफ़ विद्रोह किया था और वे दुश्मनों से जा मिले थे। ऐसे आदमी के हाथ में मराठा राज्य की बागडोर रहने देना ख़तरनाक था। इसलिए नाना फड़नवीस और दूसरे लोगों ने उनके विरुद्ध एक चाल चली। नारायणराव की स्त्री गंगाबाई इस समय गर्भवती थी। तय किया गया कि उसके लड़का हो तो, उसीको पेशवा बनाया जाय। अगर लड़का न

हुआ तो उसकी गोद में कोई लड़का देकर उसके नाम से राज चलाया जाय। इधर आनंदीबाई ने भी जाल रचकर गंगाबाई और उसके पेट के बच्चे को मरवा डालने की कोशिश की, मगर सौभाग्य से नाना की सावधानी के कारण उसकी सारी कोशिशें बेकार साबित हुईं। गंगाबाई के लड़का हुआ, जिसका नाम सवाई माधवराव रखा गया। फिर तो रघुनाथराव को गद्दी से हटाकर सवाई माधवराव के नाम से राज-काज चलाने की ज़िम्मेदारी नाना फड़नवीस पर आ पड़ी।

: ३ :

पेशवाओं के ज़माने में जातपांत और छुआछूत का बोलबाला था। स्वयं पेशवा और नाना-जैसे उनके मंत्री ब्राह्मण होते थे; इसलिए एक तरह से वह ब्राह्मणों का ही राज था और ब्राह्मण लोग पेशवाओं से अपनी मनमानी करवा लेते थे। पेशवा और नाना भी दकियानूसी थे। वे जातपांत और छुआछूत का बहुत ख़याल रखते थे। मगर जब कोई मुश्किल मौका आ जाता तब नाना इस जातपांत के खयाल को ताक पर रख देते थे और अपने बरताव से दूसरी जातियों के लोगों के दिलों को जीत लेते थे।

सन् १७६५ की बात है। निज़ाम के खिलाफ़ खर्डा नामक जगह पर मराठों की लड़ाई चल रही थी। उस लड़ाई में मराठों की तरफ़ से एक हरिजन सरदार अपनी

फौज के साथ शामिल हुआ। उसकी फौज के दोनों तरफ़ कुछ ब्राह्मण और अब्राह्मण सरदारों की फ़ौजें थीं। उनमें से कुछ सरदारों को यह बुरा लगा कि उनके साथ कोई हरिजन सरदार भी कंधे-से-कंधा भिड़ाकर चले। चुनांचे उन्होंने नाना के पास जाकर शिकायत कर दी कि इन हरिजनों से हमें छूत-छात होती है। आप हरिजन सरदार से कहिए कि वह अपनी फौज को लेकर एक तरफ़ रहे। उस समय नाना फड़नवीस के पास एक बूढ़े सरदार बैठे थे। उनकी ओर नाना ने देखा और आंखों के इशारे से ही पूछा कि कहिए, आपकी क्या राय है? बूढ़े सरदार ने निडर होकर कहा, "देखिए नानासाहब, यह कोई खाने की पंगत नहीं है। यह तो शूरों की पंगत है। यहां जात-पांत का सवाल कैसा? जिसकी तलवार ज़ोरदार हो, वही यहां मान पायगा। अतः इस सरदार को अलग नहीं किया जा सकता।" उनकी बात नाना फड़नवीस को भी बिल्कुल ठीक लगी और उन्होंने उन छूतछातवाले सरदारों की बात मानने से इंकार कर दिया। कहना न होगा कि हरिजन सरदार ने बड़ी वीरता दिखलाई और मराठों की जीत कराने में काफ़ी मदद पहुंचाई।

लड़ाई में जीतने के बाद पेशवा और नाना फड़नवीस हर सरदार के पास जाकर उनके मातहतों को जो लोग लड़ाई में ज़ख्मी हुए या मारे गये थे, इनाम-

इकराम देने लगे। लोगों से मिलते हुए वे सिंधिया की फौज के सरदार के डेरे पर पहुंचे। उन्होंने लड़ाई में कमाल कर दिया था, इसलिए पेशवा और नाना ने उनकी वीरता की तारीफ़ की और उनके लोगों में इनाम बांटे। इसके बाद सरदार ने पेशवा से अनुरोध किया कि वे जलपान करके चले जायं। सरदार सारस्वत जाति के थे, जिनके हाथ का छुआ ब्राह्मण लोग नहीं खाते थे। पेशवा बड़ी मुसीबत में पड़ गये। उन्होंने नाना की तरफ़ देखा, इसपर नाना फड़नवीस बोले, "इसमें चिंता की क्या बात है ? ये सारस्वत हैं तो क्या, इन्होंने बड़ी बहादुरी दिखलाई है। इनकी बात माननी ही चाहिए।" सवाई माधवराव को यह बात जंच गई और वे जलपान के लिए बैठ गये। उन्होंने एक बताशा खा लिया। साथ के दूसरे ब्राह्मणों ने भी अच्छी तरह से जलपान किया। सरदार को बड़ी प्रसन्नता हुई।

इसी लड़ाई के बाद की एक और घटना है। सवाई माधवराव और नाना फड़नवीस वहां से चलकर एक दूसरे सरदार के यहां गये। लड़ाई में उस सरदार का भतीजा मारा गया था। इसलिए उन्हें सूतक लगा था। उनके सैनिकों द्वारा दिखाई गई वीरता के लिए पेशवा ने उनकी तारीफ़ की, जिसे सुनकर वह सरदार अपना सारा दुःख भूल गये। इस समय शाम हो रही थी। सरदार ने कहा, "महाराज, आज आप यहींपर

संध्या और भोजन करके चले जायं।" पेशवा ने सोचा कि जिसके यहां सूतक लगे हैं, उसके यहां भोजन करना कहांतक ठीक होगा ? उन्होंने नाना फड़नवीस से पूछा तो वे बोले, "सूतक का कोई-न-कोई प्रायश्चित मिल ही जायगा; मगर अपने सरदारों को नाराज़ करना अच्छा नहीं है।" इसलिए सब लोगों के साथ पेशवा और नाना ने भोजन किया और बाद में जब इनाम-इकराम की बात चली तो वह सरदार बोले, "महाराज, हमारे यहां सूतक होते हुए भी आपने हमारी इच्छा की खातिर यहां भोजन किया, इससे अधिक बड़ा इनाम क्या हो सकता है ?" इस प्रकार जात-पांत और छूत-छात के विचारों को लड़ाई के मैदान में और ज़रूरत पड़ने पर दूसरे अवसरों पर भी नाना फड़नवीस दूर रखते थे।

नाना फड़नवीस दुबले-पतले और कमज़ोर आदमी थे, मगर उनका दबदबा बहुत था। कभी-कभी सिर्फ़ आंखों के इशारे पर वे लोगों से काम करवा लेते थे।

एक बार की बात है। मराठों और निज़ाम ने मैसूर के सुलतान पर चढ़ाई कर दी। टीपू के बदामी के क़िले पर उन्होंने घेरा डाला। दो-तीन हफ़्तों तक गोला-बारी करने के बाद भी क़िला हाथ में न आ पाया। इसका कारण यह था कि इस लड़ाई में मराठे बड़े सुस्त पड़ गये थे। दिनभर खाना-पीना और रात

को गाना-बजाना या शतरंज खेलना। इससे कोई काम ठीक ढंग से नहीं हो रहा था।

नाना फड़नवीस इस चढ़ाई में मौजूद थे। वे रात को लुक-छिपकर अपनी सेना में घूमते और यह देखते कि



नाना ने देखा, सेनापति शतरंज खेलने में मगन हैं।

लोग क्या कर रहे हैं और फौज का बंदोबस्त कैसा है। हमेशा की तरह वे एक रात को भेस बदलकर एक सेनापति के डेरे में गये। वहां देखते क्या हैं कि सेनापति बड़े मजे से शतरंज खेलने में मगन हैं। वे कुछ देर तक ताज्जुब से उन्हें देखते रहे। इतने में सेनापति ने योंही निगाह उठाकर ऊपर देखा तो दोनों की आंखें चार हो गईं। नाना झट वहां से चले गये। मगर सेनापति बड़े शर्मिंदा हुए। उन्होंने उसी वक्त खेल बंद कर दिया और दूसरे सरदारों से मिलकर दूसरे दिन के युद्ध की योजना बनाई।

अगले दिन सबेरा होने से पहले ही मराठा फौज तैयार होगई और जोरों की लड़ाई के बाद किले पर अपना झंडा गाड़ दिया।

मगर भाग्य की बात कि जब इन्हीं नाना फड़नवीस की मृत्यु हुई तो उनके अरब पहरेदारों ने उनकी अरथी को रोककर अपनी तनखा मांगी और जबतक पैसे न मिल जायं, तबतक अरथी को उठाने से मना कर दिया। उस वक्त खजाने में पैसा न था। आखिर एक मुनीम ने तनखा दिलाने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली, तब कहीं अरथी उठी !

: ४ :

नानासाहब के पास बड़े चतुर जासूस थे। इसलिए राज्य की छोटी-से-छोटी बात का भी पता उन्हें रहता था।

अंग्रेजों का एक वकील अपने सौ आदमियों के साथ पूना-दरबार में रहता था। पर यहां का खाना-पीना उसको पसंद न आता था। इसलिए उसने नाना से इजाजत लेकर बंबई से खाने-पीने की चीजें लाने का इंतजाम किया। नाना ने उसको तीन डोलियां भरकर सामान लाने की इजाजत दे दी। मगर उस वकील के दिमाग में फितूर आगया और उसने धोखा देने की सोची। उसने बंबई के अंग्रेज़ों को लिखा—"हम यहां बहुत कम लोग हैं। किसी दिन लड़ाई-झगड़ा हुआ तो हमारे पास बचाव के कोई साधन नहीं हैं। इसलिए आप खाने की डोलियों में दो छोटी-छोटी तोपें हमारे लिए भिजवा दें।" इस पत्र के अनुसार बंबई के अंग्रेज़ों ने तोपें भिजवा दीं। इन डोलियों में ताले लगे रहते थे, इसलिए चौकीदारों को कुछ पता नहीं चल सकता था। मगर नाना के जासूस बड़े होशियार थे। उन्होंने इस बात की खबर नाना को दे दी। नाना ने चुंगी के अफसर को बुलाकर कह दिया कि इस बार अंग्रेज़ों की जो डोलियां आयंगी उनमें दो को तो हमेशा की तरह पूना जाने देना, मगर लाल रंग की तीसरी डोली को चौकी पर रोक लेना।

ऐसा ही हुआ। तोपोंवाली डोली रोक ली गई। वकील समझ तो सब गये, पर बात टालना चाहते थे। इसलिए बड़े भोले बनकर उन्होंने इसका कारण पूछा।

नाना ने जवाब दिया, "हमेशा आपकी डोलियां बेरोक-टोक आ जाती हैं। इस बार एक डोली क्यों रोकी गई है, इसका कारण आप ही जान सकते हैं।"

लेकिन इतने पर भी उस अंग्रेज को अकल नहीं आई। उसने पेशवाओं के दरबार में यह बात पेश की। इसपर नाना नें कड़ककर कहा, "क्या इस बात का जवाब आप हमसे इसी समय चाहते हैं?" अंग्रेज़ समझ गया कि अब बहुत ज़ोर देना खतरे से खाली नहीं है। वह बोला, "हम माफ़ी चाहते हैं। आइंदा ऐसी बात हमसे नहीं होगी।"

नाना ने कहा, "उस डोली को हम बंबई वापस ले जाने की आज्ञा इस बार दिये देते हैं, मगर याद रखिए कि ऐसी बात फिर नहीं होनी चाहिए।"

नाना ने अपना एक आदमी निज़ाम के दरबार में भी रखा था। वह बहुत ही होशियार था। उसने गूंगा-बहरा होने का बहाना करके निज़ाम की सारी बातें सुन नाना को खबर देना शुरू किया। आखिर जब भंडाफोड़ होगया तो वह हैदराबाद से भागकर पूना आगया और नाना की सेवा करता रहा।

नाना फड़नवीस के पास लोग नौकरी मांगने के लिए आते। उनकी जांच-पड़ताल करके नाना उन्हें नौकरी देते। आदमियों को जांचने के उनके तरीक़े बड़े मजेदार होते थे।

एक बार एक बड़ा रोबदार जवान उनके पास नौकरी मांगने के लिए आया। उसकी बातचीत का नाना पर बड़ा असर पड़ा। फिर भी उन्होंने उसे कसौटी पर कसकर देखने का इरादा किया।

उन्होंने उस युवक को एक बंद डिबिया दी और कहा, "तुम इस डिबिया को अमुक गांव के फलां सेठ को दे आओ। हमने डिबिया के अंदर एक पत्र लिख रखा है। उसका जवाब ले आना। इस डिबिया पर हमने जो मुहर लगाई है उसका ठप्पा भी हम तुम्हें देते हैं और इसकी चाबी भी। ये सभी चीजें महत्व की हैं। इसलिए सावधानी से ले जाओ। वापस आने के बाद तुम्हारे लायक़ नौकरी मिल जायगी।"

जवान डिबिया अपने साथ लेकर चल दिया। जब शहर से दूर अकेले में पहुंचा तो उसके मन में विचार आया कि क्यों न इस डिबिया को खोलकर अंदर की चीज़ को देख लूं? मुहर का ठप्पा तो अपने पास है ही। अंदर की चीज़ को देखकर डिबिया को पहले की तरह बंद करना क्या बड़ी बात है? किसीको पता भी नहीं चलेगा कि डिबिया बीच में खोली गई थी।

यह सोचकर वह रास्ते के किनारे एक पेड़ के नीचे बैठ गया और उसने बड़ी सावधानी से उस डिबिया की मुहर तोड़कर चाबी से उसे खोल दिया। अंदर से एक छोटा-सा सांप झट-से बाहर निकला और देखते-

देखते आसपास की घास में ग़ायब होगया।

बेचारा जवान मुंह बाये देखता रह गया। उसने मन-ही-मन नाना की चतुराई की दाद दी और नौकरी की आशा छोड़कर अपने गांव चला गया।

: ५ :

जैसे-जैसे नाना की ताक़त और शान बढ़ती गई वैसे-वैसे उनके दुश्मन बेचैन होने लगे। बाहर तो बाहर, घर में ही नाना की जान के दुश्मन पैदा होगये। उनके चचेरे भाई ने दूसरे सरदारों की मदद से नाना को गिरफ्तार करके फड़नवीसी का काम ख़ुद हथियाने की कोशिश शुरू की। इस काम के लिए एक दिन तय किया गया। उस रोज रात को ठीक बारह बजे नाना के महल पर धावा बोलना था। उन दिनों रात को बारह बजे एक तोप दाग़ी जाती थी। तोप की आवाज़ सुनने के बाद तुरंत नाना को गिरफ्तार करने की योजना थी।

नाना भी बेखबर नहीं थे, पर उनको इस चाल का पता कुछ देरी से लगा। उन्होंने फ़ौरन तोपची को बुला लिया और कहा, "आज रात को हमेशा के समय पर तोप मत दाग़ना। पुरंदर के क़िले से जब पांच तोपों की आवाज़ें सुनाई दें तभी तुम अपनी तोप चलाना।"

इसके बाद वे चुपके से भागकर पुरंदर के किले में चले गये। उनके घर के लोगों तक को इसका पता न

चला। जब वे किले पर पहुंच गये तब उन्होंने पांच तोपें दग़वाईं। उसके बाद पूना की तोप दागी गई। उसे सुनकर सिपाहियों ने नाना के महल पर हमला बोल दिया। पर वहां क्या था ? चिड़िया तो कभी की उड़ गई थी !

पुरंदर का क़िला नाना के हाथ में था और वहां उनकी अपनी फौज भी थी। इसलिए वे बड़ी अच्छी तरह रहे। इसके बाद उन्होंने अपने सेनापतियों की मदद से उस चाल को बेकार कर दिया और सारा कारोबार अपने हाथ में ले लिया।

उस ज़माने के बड़े अमीरों में नाना की गिनती थी। लोग उनको करोड़पति कहते थे।

नाना की ताक़त का अंदाज़ा अंग्रेजों को नहीं था। इसलिए उन्होंने फिर एक बार पूना पर धावा बोलने की तैयारी की। वे बंबई से निकलकर पूना की ओर बढ़ने लगे। आधे से ज़्यादा रास्ता तय करके वे बड़ी खुशी से तलेगांव तक आगये, मगर वहां पहुंचते ही उनकी सारी खुशी काफ़ूर होगई, क्योंकि उस समय तक नाना की फौज़ों ने उनको पूरी तरह घेर लिया था और रास्ते के गांवों में आग लगा दी थी। दुश्मन को चारा-पानी न मिले, इस मतलब से अपने ही गांवों में आग लगा देने का यह उपाय बहुत पुराने ज़माने से चला आया है। नाना ने पूना तक के सारे गांवों को ही

नहीं, बल्कि ख़ुद पूना शहर को भी जला देने का पूरा प्रबंध कर रखा था। यह देखकर अंग्रेज़ों के छक्के छूट गये और वे बंबई की तरफ़ भागने लगे। बगड़वां तक पहुंचे ही थे कि मराठों ने उनपर ज़ोरदार हमला करके सैकड़ों सिपाहियों को मौत के घाट उतार दिया। इस लड़ाई में अंग्रेज़ों की तोपें, बंदूकें वग़ैरा बहुत क़ीमती सामान मराठों को मिल गया। इस लड़ाई से अंग्रेज़ों के दिलों में मराठों के बारे में आतंक छा गया।

नाना फड़नवीस अपनी बात के बड़े पक्के थे और वे चाहते थे कि दूसरे लोग भी अपने वादे पर रहें। अपनी बात को पूरा करने में चाहे जितनी मुसीबतें आजायं, वे कभी पीछे कदम नहीं हटाते थे। सवाई माधवराव पेशवा की शिक्षा-दीक्षा का भार उन्हींपर था। उनकी यह कोशिश रहती थी कि पेशवा भी अपनी बात के पक्के रहें। पेशवा के मुंह से मज़ाक में भी कोई बात निकल जाती तो वे उसे भी पूरा करवाते थे।

एक बार की बात है। पेशवा कुछ लोगों के साथ चौसर खेल रहे थे। खेलते-खेलते वे बोल उठे, "जो कोई हमें इस बार बाज़ी जिता देगा, उसे हम मोतियों का हार देंगे।"

संयोग से एक आदमी के दांव से पेशवा की जीत होगई। मगर इतने में पेशवा अपना वादा भूल गये। बात आई-गई होगई। उस समय नाना फड़नवीस भी

वहां मौजूद थे। उन्होंने देखा कि पेशवा अपनी बात भूल गये हैं। अगर उनकी ऐसी ही आदत पड़ गई तो अच्छा न होगा, यह सोचकर बाहर गये और एक तश्तरी में मोतियों का हार ले आने को नौकर से कहा। नौकर हार ले आया।

जब खेल ख़त्म हुआ तो नाना ने पेशवा से कहा, "आपने मोतियों का हार देने की बात की थी। लीजिए यह हार। उन सज्जन को अपने हाथ से दे दीजिए।"

: ६ :

नाना फड़नवीस को हमेशा पेचीदा कामों में उलझा रहना पड़ता था, अंग्रेज़ों और मुग़लों के साथ चालें चलनी पड़ती थीं और घर के भेदियों से भी राज्य को बचाना पड़ता था। इतने पर भी लोगों के साथ वे बड़े खुल-कर और ज़िंदादिली से पेश आते थे। ऐसे लोगों में एक थे पुरुषोत्तमरावदाजी पटवर्धन। ये पटवर्धन बड़े मौजी आदमी थे।

एक दफ़ा पटवर्धन ने नाना को भोजन के लिए बुलाया और रसोइया से कह दिया कि वह नाना के लिए बहुत ज्यादा मिर्च डालकर अलग से रसम या सालन बनाये। उसके अनुसार रसोइया ने खूब लाल मिर्च डालकर उसका रसम बनाया। औरों की कटोरियों में तो उसने नाममात्र को परोसा, मगर नाना की कटोरी को पूरी तरह भर दिया। उन दिनों

अमीर लोगों के भोज में अंगूर का रस दिया जाता था। अतः उस मिर्च के रसम को देखकर नाना ने समझा



रसम पीते ही नाना का मुंह जलने लगा।

कि यह अंगूर का रस होगा, और उन्होंने बड़े मजे से उसे पी लिया।

नाना की सेहत बड़ी नाज़ुक थी और उन्हें मिर्च खाने की बिल्कुल आदत नहीं थी। इसलिए रसम पेट में जाते ही नाना का मुंह जलने लगा और उनकी आंखों तथा नाक से पानी बहने लगा। यह देखकर पटवर्धन ने नाराज़ी का दिखावा करके कहा, "हर रोज़ ये मूर्ख रसोइये इसी तरह बेहिसाब मिर्च डालकर हमें परेशान करते रहते हैं। इन्हें कड़ी सज़ा देनी चाहिए।" और रसोइया से कहकर नाना की थाली में दही और मक्खन परोसवा दिया। नाना सब समझ गये। तक-

लीफ हो रही थी तो भी हँसकर बोले, "अजी, जाने दीजिए। बहुत न बनाइए हमको। उस बेचारे रसोइया को क्यों नाहक डांट पिलाते हैं ? हम आजतक सुनते थे कि पटवर्धन लोग बड़े तीखे हैं, मगर आज उसका अनुभव खुद हमें होगया !"

इसी तरह की एक और घटना है। महाराष्ट्र में एक प्रथा चली आई है कि बड़े-बड़े भोजों में भोजन करने-वालों में से कुछ सुरीली आवाज़वाले लोग संस्कृत या मराठी के श्लोक बोल देते हैं। जो लोग संगीत जानते हैं, वे गा भी देते हैं।

जब भोजन आधा हो चुका तो पटवर्धन ने एक बेसुरी और भैंसे-जैसी आवाज़वाले आदमी से श्लोक बोलने को कहा। उसने इतने ज़ोर से चिल्लाकर श्लोक कहा कि भोजन करनेवाले सभी लोग चौंक पड़े। श्लोक पूरा हो जाने पर पटवर्धन ने नाना से कहा, "ये बड़े गुणी आदमी हैं ! हमारे पास ही रहते हैं। इनका संगीत का अध्ययन बड़ा गहरा है।"

इसपर नाना ने हँसकर कहा, "हां, हो सकता है, मगर अभी घर की छत उड़ी जा रही थी; उसका क्या किया जाय ? आप अपने आदमी का गाना ज़रूर सुना करें, मगर कृपा करके इस समय उनसे दूसरा श्लोक न बुलवाइए !"

सब लोग खिलखिलाकर हँस पड़े !

उस ज़माने में साढ़े तीन सयाने मशहूर थे। सखाराम बापू बोकील, देवाजीपंत चोरघड़े और विट्ठल सुंदर परिशरामी ये तीन पूरे सयाने थे, क्योंकि ये लोग राज-काज चलाने में होशियार थे और साथ ही लड़ाई लड़ना भी अच्छी तरह जानते थे। नाना फड़नवीस सिर्फ़ अकल में अपनी सानी नहीं रखते थे। उन्हें लड़ना नहीं आता था। इसलिए उनका सयानापन अधूरा समझा जाता था; और वे आधे सयाने माने गये। सखाराम बापू बोकील पूना में पेशवाओं की सेवा में थे। देवाजीपंत चारेघोड़े नागपुर के भोंसलाओं के प्रधान मंत्री थे और विट्ठल सुंदर हैदराबाद के निज़ाम के वज़ीर थे। युद्ध की कला से अजानकार होते हुए भी नाना फड़नवीस ने अक्ल के ज़ोर पर बरसों तक अपना काम बड़ी अच्छी तरह से किया।

: ७ :

जिस तरह उत्तर भारत में बीरबल की बुद्धिमानी की कहानियां मशहूर हैं, उसी तरह महाराष्ट्र में नाना फड़नवीस की अक़्लमंदी की कहानियां बड़े शौक से कही जाती हैं।

एक बार घोड़ों का एक सौदागर पूना पहुंचा। वह अपने साथ दो उम्दा घोड़ियां लाया। ये दोनों घोड़ियां हूबहू एक दूसरी की तरह थीं, मानो एक ही सांचे में ढली हुई हों। उसने पूना में आकर कहा

कि जो कोई यह बता देगा कि इनमें से मां कौन-सी है और बेटी कौन-सी, उसे ये दोनों घोड़ियां इनाम में दे दूंगा । अगर कोई इस बात को न बता सकेगा तो मैं सारी दुनिया में यह कह दूंगा कि पूना में एक भी बुद्धिमान् आदमी नहीं है ।

बहुत-से लोगों ने कोशिश की, मगर कोई भी न बता सका । यह बात नाना तक भी पहुंची । नाना ने जब घोड़ियां देखीं तो वे भी चक्कर में पड़ गये। उन्होंने लाख सिर मारा, पर जवाब न सूझा । आखि़र उन्होंने चार दिन की मुहलत मांगी ।

बरसात के दिन थे। नदी में बाढ़ आई हुई थी। यह देखकर नाना को एक बात सूझी । उन्होंने उन दोनों घोड़ियों को बाढ़ में छोड़ दिया और उनकी तरफ़ देखते रहे । थोड़ी देर तक वे दोनों साथ-साथ चलीं, मगर जब पानी में पड़े भंवर तक वे पहुंच गईं तो आगे न बढ़ सकीं । पर वहां कबतक रुकतीं ? आखि़र एक घोड़ी आगे बढ़ गई । नाना ने यह देखकर कहा, "वही मां है, जो आगे बढ़ गई है ।" बात ठीक निकली । सौदागर ने नाना की बुद्धिमानी की दाद दी । नाना समझ गये थे कि मां तजुर्बेकार होने से आगे बढ़ी थी और बच्ची ने मां का पीछा किया था ।

एक बार एक परदेशी पेशवाओं के दरबार में आया । वह मराठी, हिंदी, उर्दू, गुजराती, बंगला,

पंजाबी, कन्नड़ आदि भाषाएं इतनी आसानी और सहजता के साथ बोलता था कि यह पहचानना भी मुश्किल होता था कि उसकी अपनी जबान क्या है। उसने लोगों से कहा, "अगर आप यह बतादें कि मेरी ज़बान क्या है तो मैं समझूंगा कि आपमें कोई अक़्लमंद आदमी है।"



दोनों घोड़ियों को बाढ़ में छोड़ दिया।

इस बात का जवाब नाना के सिवा भला कौन दे सकता था ?

नाना ने उस आदमी को अपने घर पर बड़े आराम

से रखा और एक दिन दोपहर को जब वह सोया हुआ था, उसके मुंह पर ठंडे पानी के छींटे मारे। वह आदमी नींद में से हड़बड़ाकर उठा और अपनी मातृभाषा में बड़बड़ाया। इससे पता चल गया और इस तरह होशियारी से नाना ने उसकी ज़बान बता दी।

एक बार एक जौहरी एक हीरा लेकर पूना-दरबार में पहुंचा और उसने दरबारियों के सामने वह हीरा पेश किया तथा उसकी कीमत पूछी। सब बारी-बारी से उसकी परख करके क़ीमत बता देते थे और जौहरी हँस देता था। नाना फड़नवीस दूर से यह तमाशा देख रहे थे। जब वह जौहरी उनके पास पहुंचा तो उन्होंने उससे कहा, "सारे जौहरियों से दो मक्खियां ज्यादा अक्लमंद साबित हुईं। हम आपके इस हीरे को थोड़ी देर तक पानी में रख देते हैं और अगर वह बचा रहा तो फिर इसकी क़ीमत बतायंगे।" बात असल में यह थी कि जब वह जौहरी उस हीरे को दूसरों को दिखा रहा था, उस समय दो मक्खियां उस हीरे के आस-पास उड़ रही थीं। इसपर से वे जान गये कि यह हीरा नहीं, बल्कि मिसरी की डली है।

अकलमंदी की तरह नाना का शील भी बहुत ऊंचे दर्जे का था। खर्डा की लड़ाई में हारकर निज़ाम गढ़ी में छिप गया और उसकी बेगमें बाहर रह गईं। मराठों ने उन्हें नाना के सामने पेश किया। नाना फौरन बोले,

"हमारी लड़ाई निज़ाम के साथ है, न कि उनकी बीवियों से। इन देवियों को अभी निज़ाम के पास पहुंचा दो !"

: ८ :

दक्षिण में हैदराबाद के निज़ाम की ताकत बहुत बढ़ी-चढ़ी थी। नाना चाहते थे कि उसको एक बार अच्छा सबक़ सिखाया जाय। वे मौक़े की ताक में थे। जब उत्तर भारत की लड़ाइयों से छुटकारा मिला तो उन्होंने निजाम से तक़ाज़ा शुरू कर दिया कि मराठों का जो रुपया निकलता है उसे वह जल्दी चुका दे। पेशवाओं के राजदूत ने जब निज़ाम को हिसाब दिखाया तो उसका दीवान बोला, "हमारी समझ में तो यह हिसाब नहीं आता। ख़ुद नाना फड़नवीस यहां आयें और हमको हिसाब समझा दें।" इसपर पेशवा के राजदूत बोले, "नाना के सिर तो बहुत सारे काम लगे हुए हैं। वे यहां कैसे आ सकते हैं ?" निजाम के दीवान ने तपाक से जवाब दिया, "कैसे आ सकते हैं ? हम अभी दिखाते हैं, कैसे आते हैं !"

इतना ही नहीं, बल्कि निज़ाम के दरबार में पेशवा और नाना के स्वांग रचकर उनका मज़ाक उड़ाया गया और निज़ाम कहने लगा, "हम पूना पर धावा बोलकर पेशवा और नाना फड़नवीस को लंगोटियां पहनाकर भिखमंगे बनने पर मजबूर करेंगे और पूना को जला देंगे।"

ये सब बातें सुनकर नाना ने लड़ाई की तैयारियां शुरू कर दीं। सारी मराठा फौजें एक होगईं। सभी सरदार आगये। खुद माधवराव पेशवा और नाना फड़नवीस इस लड़ाई में शरीक हुए। दोनों फ़ौजों में जमकर लड़ाई हुई। निजाम के हजारों सैनिक मारे गये। निज़ाम को बुरी तरह मुंह की खानी पड़ी।

नाना और मराठों की ज़िंदगी में कंधे-से-कंधा भिड़ाकर लड़ने की यह आखिरी घटना थी। इसके बाद दोनों को बुरे दिन देखने पड़े और थोड़े ही दिनों में मराठों का राज्य अंग्रेज़ों के हाथ में आगया। माधवराव पेशवा मर गये। उनके बाद जो पेशवा गद्दी पर बैठा, वह नाना को फूटी आंखों भी नहीं देख सकता था। उसने नाना के दुश्मनों से मिलकर उन्हें पूना से भगा दिया। लेकिन अपनी बुद्धि के बल पर नाना ने फिर एक बार मराठी राज्य की बागडोर अपने हाथ में ले ली। मगर वह बागडोर ज्यादा दिन तक उनके हाथ में न रही। उनके दुश्मनों ने अंग्रेज़ों की मदद से नाना को क़ैद कर दिया। बाद में वे रिहा होगये। १३ मार्च सन् १८०० को पूना में उनका स्वर्गवास हो गया।

नाना को लड़ाई-झगड़ों से नफरत थी, मगर दुर्भाग्य से ज़िंदगी-भर उनको करना यही पड़ा। बच-पन से उनपर कठिनाइयों के पहाड़ टूटते रहे, इसलिए

वे हमेशा उदास-से रहते थे। उनका स्वभाव बड़ा दयालु था और वे हमेशा दूसरों की भलाई करते थे। राज्य की आमदनी बढ़ाने के लिए नाना ने नई बस्तियां बसाईं, पड़ती भूमि को उपजाऊ बनाया और बांध-नहरों का निर्माण किया। इससे प्रजा को बहुत लाभ हुआ। उन्होंने तीर्थ-क्षेत्रों में कई घाट और मंदिर बनवाये। उनके पास बहुत पैसा था और उसे वे खुलेदिल और खुलेहाथ खर्च भी कर डालते थे। वे बड़े धार्मिक स्वभाव के थे, लेकिन अपनी धार्मिकता का दिखावा कभी नहीं करते थे। एक आदमी अपनी बुद्धि के बल पर कैसे-कैसे काम कर सकता है, इसकी जीती-जागती मिसाल नाना हैं।

मराठी के बहुत-से कवियों ने नाना पर कविताएं लिखी हैं। एक कवि ने ठीक ही कहा है—

भले बुद्धिचे सागर नाना, ऐसे नाहीं होणार।
खूप शर्थिनें राज्य राखिलें, मनसू बीची तलवार ॥

——नाना फड़नवीस मानो बुद्धि के सागर थे। ऐसे आदमी आगे नहीं होंगे। इन्होंने बुद्धिमानी की तलवार से मराठों के राज्य की रक्षा बड़ी हिम्मत से की।

समाज विकास - माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोंहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी - मानस - मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी - जीवन
७०. मूरखराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक

मूल्य प्रत्येक का छः आना

७१

सस्ता साहित्य मण्डल

छः आना